गुरुजनों और वरिष्ठों के प्रति व्यवहार
प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए

१.अपनेसे श्रेष्ठ और अपनेसे निम्न व्यक्तियोंकी शय्या और आसनपर नहीं बैठना चाहिये-

शय्यासनेऽध्याचरिते श्रेयसां न समाविशेत्।

(मनुस्मृति २।११९)

'नोत्कृष्टशय्यासनयो पकृष्टस्य चारुहेत्'

(मार्कण्डेयपुराण ३४।८५)

२. गुरु, राजा या किसी श्रेष्ठ व्यक्तिके सम्मुख बिना अनुमतिके नहीं बैठना चाहिये-

न-साम्मुख्ये-गुरोः स्थेयं राज्ञः श्रेष्ठस्य कस्यचित्॥

(शुक्रनीति ३।१४७)

३. जो मनुष्य श्रेष्ठ पुरुषों के सम्मुख ऊँचे

आसनपर बैठता है, वह निश्चय ही इस लोकमें और परलोकमें कष्ट पाता है-

उच्चालयोपविष्टस्य मान्यानां पुरतो यदि।
गच्छेत्स विपदं नूनमिहचामुत्र चैव हि ॥

(लघ्वाश्वलायनस्मृति २२।२०)

४. गुरु, देवता, ब्राह्मण, गौ, वायु, अग्नि, राजा, सूर्य, चन्द्रमा और अपनेसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंके सामने पैर नहीं फैलाने चाहिये-

नाभिप्रसारयेद् देवं ब्राह्मणान् गामथापि वा।
वास्वग्निगुरुविप्रान् वा सूर्य वा शशिनं प्रति ॥

(कूर्मपुराण,उ०१६।६९:पद्मपुराण,स्व०५५।६९-७०)

पादौ प्रसारयेन्नैव गुरुदेवाग्निसम्मुखौ।

(स्कन्दपुराण, मा ० कौ ०४१।१२७)

५.गुरु अथवा श्रेष्ठ पुरुषोंके किसी वचनका अपने वचनसे खण्डन नहीं करना चाहिये-

वाक्येन-वाक्यस्य-प्रतिघातमाचार्यस्य-वर्जयेच्छ्रेयसां च। (आपस्तम्बधर्मसूत्र २।२।५।११)

६. गुरुजनों तथा राजाके सामने ऊँचे आसनपर न बैठे, प्रौढ़पाद न बैठे और उनके वचनोंका तर्कद्वारा खण्डन न करे-

गुरूणांपुरतो राज्ञो न चासीत महासने॥
प्रौढपादो न तद्वाक्यं हेतुभिर्विकृतिं नयेत्।

(शुक्रनीति ३।१६३-१६४)

७.बुद्धिमान् मनुष्यको उत्तम अथवा अधम व्यक्तियोंसे विरोध नहीं करना चाहिये-

विरोधं नोत्तमैर्गच्छेन्नाधमैश्च सदा बुधः।

(विष्णुपुराण ३।१२।२२)

'नोत्तमैर्विरुध्येत' (चरकसंहिता, सूत्र ०८।१ ९)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

८.अत्यन्त क्रोधकी अवस्थामें भी पूज्य पुरुषोंकी आज्ञाका उल्लंघन और अपमान नहीं करना चाहिये-

नातिक्रुद्धोऽपि मान्यमतिक्रामेदवमन्येत वा ॥

(नीतिवाक्यामृत २५।८०)

९.अपनेसे बड़ोंके सामने मल-मूत्रका त्याग करना अथवा थूकना नहीं चाहिये-

सोमाग्न्यिम्बुवायूनां पूज्यानां च न सम्मुखम्।
कुर्यान्निष्ठीवविण्मूत्रसमुत्सर्गं च पण्डितः ॥

(विष्णुपुराण ३।१२।२७)

१०. बड़े पुरुष सोते हों तो उन्हें जगाना नहीं चाहिये-

श्रेयांसंन प्रबोधयेत् ' (मनुस्मृति ४।५७)

११. राजा, देवता, गुरु, अग्नि, तपस्वी और धर्म तथा ज्ञानमें श्रेष्ठ पुरुषोंकी सेवा नित्य सावधान होकर भलीभाँति करनी चाहिये-

सावधानमना नित्यं राजानं देवतां गुरुम्।
अग्निंतपस्विनं धर्मज्ञानवृद्धं सुसेवयेत् ॥

(शुक्रनीति ३।५१)

१२. श्रेष्ठ पुरुषोंकी अनुमतिके बिना उनके साथ कार्य करनेकी इच्छा नहीं करनी चाहिये-

उत्तमैरननुज्ञातं कार्य नेच्छेच्च तैः सह।

(शुक्रनीति ३। १४५)

१३. अपनेसे बड़ोंका नाम लेकर या ' तू' कहकर नहीं पुकारना चाहिये।

त्वंकारं नामधेयं च ज्येष्ठानां परिवर्जयेत्।

(महाभारत, शान्ति० १९३।२५)

१४. यदि किसी गुरुजनको ' तू' कह दिया जाय तो यह साधु पुरुषोंकी दृष्टिमें उसके वधके समान है। गुरुको तू कह देना उसे बिना मारे ही मार डालना है-

त्वमित्युक्तो हि निहतो गुरुर्भवति भारत।

(महाभारत, कर्ण ०६ ९ ।८३)

अवधेन वधः प्रोक्तो यद् गुरुस्त्वमिति प्रभुः।
तद् ब्रूहि त्वं यन्मयोक्तं धर्मराजस्य धर्मवित् ॥

(महाभारत, कर्ण ०६ ९ ।८६)

न जातु त्वमिति ब्रूयादापनोऽपि महत्तरम्।
त्वंकारो वा वधो वेति विद्वत्सु न विशिष्यते ॥

(विष्णुधर्मोत्तर ०३।२३३।२४४)

त्वंकारो वा वधो वापि गुरूणामुभयं समम् ॥

(स्कन्दपुराण, मा० कौ ०४१॥१६८)

१५.देवमन्दिर, ब्राह्मण, गाय और अपनेसे बड़ोंके पास पहुँचनेसे पहले ही रथ (वाहन) -से उतर जाना चाहिये-

अप्राप्य देवताः प्रत्यवरोहेत्सम्प्रति ब्राह्मणान्मध्ये गा अभिक्रम्य पितॄन्।

(पारस्करगृह्यसूत्र ३।१४।८)